Ref-No. GGVS-2021/21/145

पशुओं में खुरपका-मुँहपका रोग एवं रोकथाम

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

श्रीरामशान्तये

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

खुरपका-मुँहपका रोग

यह मुख्यतः गाय, भैस, बकरी एवं शूकर जाति के पशुओं में होने वाला विषाणु जनित, अत्यन्त संक्रामक, छूतदार एवं अतिव्यापी रोग है। छोटी उम्र के पशुओं में यह रोग जानलेवा भी हो सकता हैं। संकर नस्ल के पशुओं में यह रोग अत्यन्त तेजी से फैलता हैं। इस रोग में मृत्युदर तो कम हैं, लेकिन दूधारू पशुओं का दूध उत्पादन बहुत कम हो जाता है। इस रोग का फैलाव पशुपालक को अत्यधिक आर्थिक हानि पहुँचाता है।

रोग का फैलाव

- दूषित चारे, दाने व पानी के सेवन से
- रोगी पशु की बिछावन के सम्पर्क में आने से
- रोगी पशु के गोबर एवं पेशाब से
- दूधारू पशुओं के ग्वाल से
- हवा के माध्यम से

रोग के लक्षण

- 105–107 डिग्री फॉरेनहाइट तक तेज बुखार
- मुँह, मसूडे व जीभ पर छाले, लगातार लार का गिरना
- पैरों में खुरों के बीच छाले जिससे पशु का लंगडाना
- पैर में छालों के जख्म एवं कीड़े पड़ना
- दूधारू पशु के थनों एवं गादी में छाले पड़ना
- कुछ पशुओं में हांफने की बीमारी होना
- दूधारू पशुओं में दूध के उत्पादन में अचानक कमी आना

रोग का उपचार

1. पशुओं एवं खुर के घावों की प्रतिदिन सुबह–शाम फिटकरी या लाल दवा के हल्के घोल से सफाई करें।
2. घाव में कीड़े पड़ने पर फिनाइल तथा मीठे तेल की बराबर मात्रा मिलाकर लगाये।
3. फिनाइल तथा मीठा तेल उपलब्ध न होने पर नीम के पत्ते उबालकर ठंडे किये पानी से जख्म साफ करें।
4. इस रोग से पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने से अन्य रोगों के बचाव हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार करावें।

रोग की रोकथाम व बचाव

1. पशुओं में प्रतिवर्ष नियमित रूप से टीकाकरण करावें।
2. यह रोग महामारी के रूप में फैलता है अतः रोगी पशु को स्वस्थ पशु से तुरन्त अलग रखें।
3. रोगी पशु को बांधकर रखें व घूमने–फिरने न दें।
4. बीमार पशु के खाने–पीने का प्रबंध अलग ही करें।
5. रोगी पशुओं को नदी, तालाब, पोखर आदि में पानी न पीने देवें।
6. पशु को कीचड़, गीला व गंदी जगह पर नहीं बाधें। पशु को हमेशा सूखे स्थान पर ही बाधें।
7. रोगी पशु को सम्भालने वाले व्यक्ति को बाड़े से बाहर आने पर हाथ–पैर साबुन से अच्छी तहर से धो लेने चाहिए।
8. खुरपका–मुँहपका रोग से सक्रमित पशु को बेचना, गाँव के अन्य पशुओं के लिये भी खतरा है। अतः रोगी पशुओं को न बेचें और न ही खरीदें एवं पशु का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन नही करें।

9. गो गृह में दरवाजे पर चौड़ी एवं हल्की क्यारी बनाकर चुना युक्त पानी भरा रखें, पशु बहार से आए तो उससे होते हुए अन्दर आए, ताकि पैरों की गन्दगी साफ होती रहे, इस पानी को रोज बदलते रहे।
10. रोग की सूचना तुरन्त पशु चिकित्सालय में देवें।
11. जहां–जहां पशु की लार आदि गिरती है, वहां पर कपडे धोने का सोडा/चूना इत्यादि डालते रहें, यदि संभव हो तो फिनाइल से धोना भी लाभप्रद होता हैं।

रोग से आर्थिक हानि

इस रोग से दूधारू पशुओं का दूध बहुत कम होता हैं। रोग के कारण खेती में काम आने वाले पशुओं की कार्य क्षमता पर भी प्रतिकूल असर पड़ता हैं। कभी–कभी इस रोग के कारण पशुओं की मृत्यु भी हो जाती हैं। जिससे पशु पालकों को बहुत आर्थिक हानि हो सकती। अतः पशु पालक इस रोग के प्रति सावधान रहते हुये समय पर पशुओं को टीकाकरण आवश्यक रूप से करवायें।

इस रोग से बचने के लिए अपने दुधारू पशुओं को एफ.एम.डी. का टीका लगवा लें

- ताकि उनकी दूग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे।
- दूधारू पशुओं को वर्ष में दो बार लगाया जाने वाला यह टीका प्रदेश की सभी विभागीय पशु चिकित्सा संस्थाओं में उपलब्ध हैं।